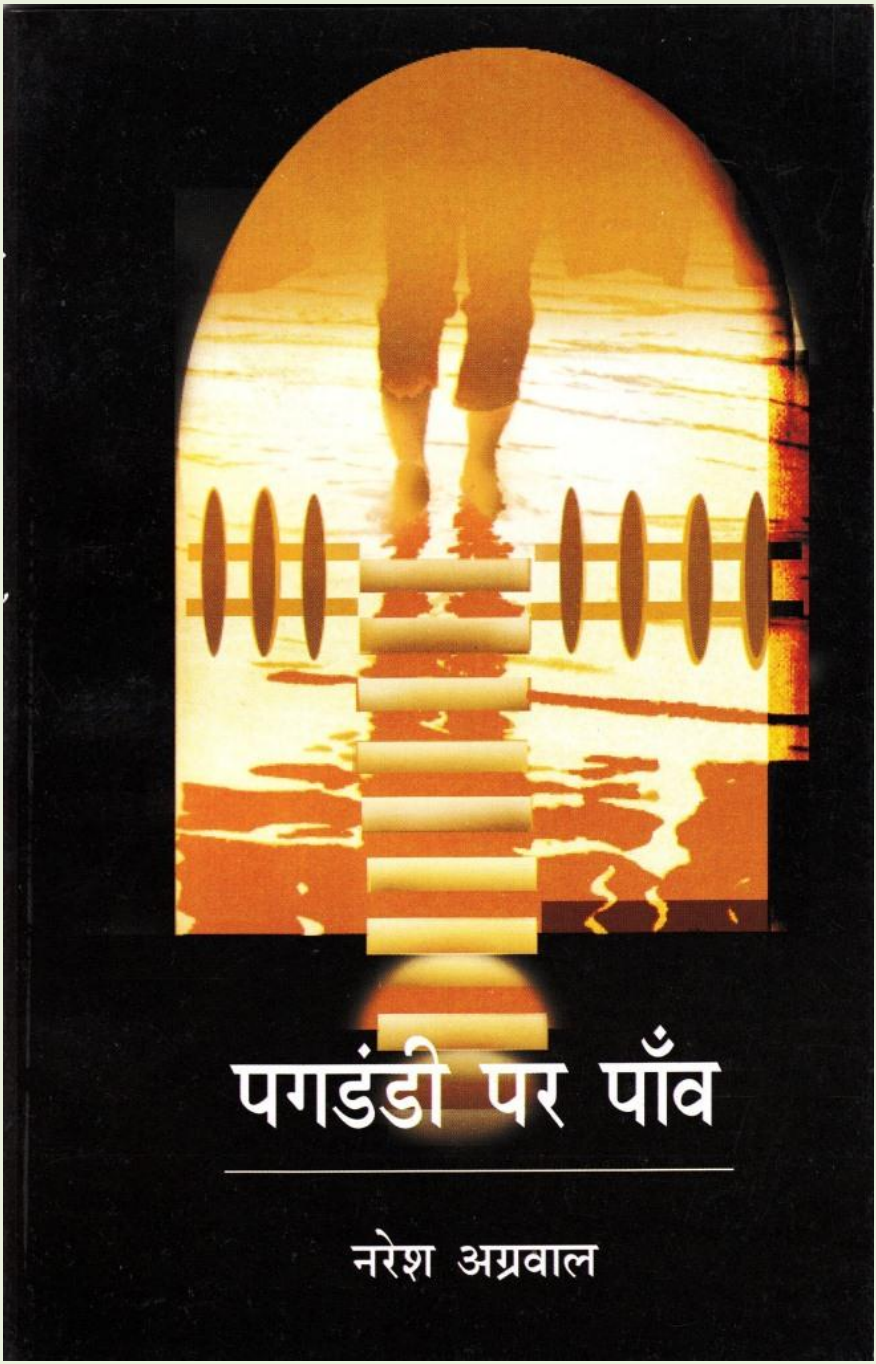
पगडंडी पर पाँव
नरेश अग्रवाल

पगडंडी पर पाँव

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।

पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा सन् 2004 में किया जा चुका है।

ISBN: 81-7714-118-x

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234,
65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा

जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों दुर्लभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।
लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क –
रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001
दूरभाष – 9334825981, 7488504892
ई. मेल – **smcjsr77@gmail.com**
बेवसाईट : **www.nareshagarwala.com**

आत्मकथन

जब तक शब्द अक्षर थे वे चुपचाप थे, परन्तु जब वे चित्र बने, चलने लगे। एक सधी हुई कलम से सारा काव्य चित्रमय हो जाता है। घटनाएँ काल्पनिक न होकर एक जीती–जागती प्रस्तुति बन जाती हैं। वे सारे प्रतीक और उपमाएँ अपने पंख फड़फड़ाने लगती हैं, और जब समाप्त होता है कथन तो लगता है कुछ रहस्यमय उतर आया है हृदय में, वह भी बिना अनुमति के। इसी तरह के अनुभवों से सरोकार हो पाठक का, यही सोचकर इन कविताओं की रचना की गयी है।

अन्त में बस इतना कहना चाहूँगा–
लोग उलझे रहेंगे।
शताब्दी के नये–नये कारनामों में
हर दिन नयी चीजें उपलब्ध होंगी
उनके हाथों में
फिर भी मेरी कविताओं,
तुम्हें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ेगा,
रखा जाएगा हाथों में जब भी तुम्हें
अँगुलियाँ पन्ने पलटने लगेंगी।

–डॉ. नरेश अग्रवाल

सम्मतियाँ

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।''
– इंडिया टुडे

''सब कुछ को सलीके से छिपाकर वे अपने पाठक को सरल से सरल भाषा में दृश्य–दर–दृश्य, कुछ अनसुने, अनदेखे और अनजाने को सुनने, देखने और जानने के लिये उकसाते हैं। इसलिए उस मर्म और तत्त्व को ढूँढ़ते हुए, वहाँ तक पहुँचने की प्रक्रिया में वे पाठक को खोजकर पाने के सुख से सुखी कर देना चाहते हैं। उसे अपने ढंग से अपने लिए पाकर पाठक के मन में उसके विस्तार और उसके प्रदर्शन की सबसे ज्यादा सम्भावना बनती है।''
लीलाधर जगूड़ी
(पद्मश्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

''ये कविताएँ हृदय का उद्‌गार हैं, हृदय की बात है। प्रभविष्णु कविचित्त पर जीवन के प्रसंगों ने जो तरंगें उत्पन्न की, उनकी अक्षत अभिव्यक्ति सरल–सुगम भाषा में कवि का अभीष्ट है। ये जीवन–प्रसंग जाने–पहचाने, रोज–ब–रोज के होते हुए भी एक विस्तृत सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत होकर नया अर्थ ग्रहण करते हैं।''
– अरुण कमल, कवि एवं सम्पादक

''नये घर में प्रवेश, नये घर में प्रवेश नहीं, कवि का अपनी अन्तश्चेतना की चौखटों को पारकर अपने आप को पाने, खोजने का प्रयत्न हे। गहन आत्मविश्लेषणात्मक है कवि का दृष्टि। दुनिया के सारे कुएँ से लेकर–कई कविताएँ।''
–चित्रा मुद्गल, उपन्यासकार

''श्री नरेश अग्रवाल की इन कविताओं में समय और परिवेश के प्रति कवि की विनम्रता आकर्षित करती है। इनमें किसी प्रकार का भावुक आवेश या आक्रामक उबाल नहीं है, न अनुभव और भाषा की स्फीति। अभिव्यक्ति का यह अनुशासन इन कविताओं को प्रौढ़ और चिन्तनपरक बनाता है।''
–श्री विश्वनाथ तिवारी
कवि एवं सम्पादक, दस्तावेज

''आपकी सृजनात्मकता ने नये धरातलों को स्पर्श किया है। अपने आसपास के जीवन से यह संलग्नता इनकी एक विशिष्ट पहचान बनाती है। संवेदनात्मक गहराई में डूबी हुई इन कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपकी मार्मिकता मन को छूती है।''
– विजय कुमार, कवि एवं आलोचक

''आपकी प्रकृति आधारित कविताएँ भी मात्र दृश्यचित्र नहीं हैं, उनमें मन बोलता है। कश्मीर को आपने सैरगाह की जगह संवेदना बनाया है। अगर इन पुस्तकों का वितरण ठीक प्रकार से किया जाए तो ये समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।''
– ममता कालिया, साहित्यकार

''आपकी कविताओं में बड़ी सहजता है। अनुभवों का निर्व्याज आवेग है। बड़ी आत्मीय स्वतः स्फूर्तता है।''
– विजेन्द्र, कवि एवं सम्पादक

''श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है।''

–श्रवण कुमार गोस्वामी
पूर्व सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति
गृह मन्त्रालय, भारत सरकार

विषय-सूची

पगडंडी	12
अन्तिम संस्कार	13
कैसे चुका पायेंगे तुम्हारा ऋण	15
दादीजी के लिए	16
यह लालटेन	17
परीक्षाफल	18
ऊँचाई पर	19
उसके पीछे	20
निर्बल	21
प्रतिबिम्ब	22
बैण्डबाजे वाले	23
तुम्हारी थकान	24
फुटबॉल	25
पिंजड़ा	26
शंका	27
लैम्पपोस्ट	28
दो हिस्से	29
छिपकली	30
लोहा बन गया हूँ मैं	31
काम	32
हर कदम पर	33
भाग्य रेखा	34
आजकल	35
सेल्समैन	36

ओ काम करने वाले भाई 38
मजदूर के घर कबूतर 39
बारिश 41
मजदूर की लड़ाई 42
लेकिन कोई घर नहीं 44
डर 45
मजबूरी 46
भाग्य 47
गेहूँ के दाने 48
समानता 49
चिट्ठी 50
पिता के लिए 51
पिता के लिए प्रार्थना 53
बीमार माँ के लिए दर्द 55
एक बात 56
प्रार्थना ही तो है–1 57
प्रार्थना ही तो है–2 58
शिक्षा 59
विश्वास 60
वे सफेद हाथ 61
मुझे थोड़ा सा वक्त दे 62
हर आनेवाली मुसीबत 63
शोर 64
मौत का दुःख 65
स्पर्श 67
तलाश 68

चिता 70
टोपी 71
अचानक 72
जलने के बाद 73
पहले और बाद 74
पशु–पक्षी 75
पहली बार 76
काँटा 77
रेगिस्तान 78
साहस 80
तैयारी 81
दीवाली के बाद 82
घास–1 83
घास–2 84
पतझड़ के बाद 86
पेड़ 87
पक्षियों के लिए 88
सड़े हुए फल 89
तरबूज 90
इन्तजार 91
फसल 92
सपना 93
पुराने जमाने का व्यंग्य 94
पत्नी के जन्मदिन पर 96

पगडंडी

जहाँ से सड़क खत्म होती है
वहाँ से शुरू होता है
यह सँकरा रास्ता
बना है जो कई वर्षों में
पाँवों की ठोकरें खाने के बाद,
इस पर घास नहीं उगती
न ही होते हैं लैम्पपोस्ट
सिर्फ भरी होती है खुशियाँ
लोगों के घर लौटने की!

❑❑❑

अंतिम संस्कार

मैं गुजर रहा था
अपने चिरपरिचित मैदान से
एकाएक चीख सुनी
जो मेरे सबसे प्रिय पेड़ की थी

कुछ लोग खड़े थे
बड़ी-बड़ी कुल्हाडियाँ लिये
वे काट चुके थे इसके हाथ
अब पाँव भी काटने वाले थे

मैंने इशारे से उन्हें रोकना चाहा
वे रुके नहीं अपना काम करते रहे

मैंने फिर कहा माफ करो इसे
अगली बार यह जरुर फल देगा
इसमें पत्ते भी आयेंगे और फूल भी
पथिक भी आराम करेंगे
चिडियाँ भी घोंसले बनायेंगी

नहीं वे माने और न ही रुके
केवल बुदबुदाते रहे-
मरे हुए का शोक करता था
कौन है यह आदमी ?

क्या इसे अपना हिस्सा चाहिए ?

आगे मैं कुछ बोलता
वे पहले ही बोल पड़े–

हम लोग लाश उठा रहे हैं
अंतिम संस्कार भी करा देंगे
तुम राख ले जाना

वे बहुत खुश थे
जोर–जोर से हँस रहे थे
जड़ें हिल रही थीं उनकी हँसी से,
कुल्हाडियाँ चमक रही थीं
और उखड़ने लगे थे
धरती से मेरे पाँव ।

❑❑❑

कैसे चुका पायेंगे तुम्हारा ऋण

रात जिसने दिखाये थे
हमें सुनहरे सपने
किसी अजनबी प्रदेश के
कैसे लौटा पायेंगे
उसकी स्वर्णिम रोशनी

कैसे लौटा पायेंगे
चाँद–सूरज को उनकी चमक
समय की बीती हुई उम्र
फूलों को खुशबू
झरनों को पानी और
लोगों को उनका प्यार

कैसे लौटा पायेंगे
खेतों को फसल
मिट्टी को खाद
पौधों को उनके फल

ऐ धरती तुम्हीं बता
कैसे चुका पायेंगे
तुम्हारा इतना सारा ऋण ।

❑❑❑

दादी जी के लिए

तुम नहीं हो
फिर भी हमें लगता है
तुम यहीं कहीं हो

कभी घड़े के पानी की तरह
उतरती हो हमारे गले में
कभी अन्न का स्वाद बनकर
शांत करती हो हमारी भूख

दीये की लौ की तरह
जलती हो हमारी पूजा में
फूलों की सुगन्ध बनकर
बसती हो हमारी प्रार्थना में

एक आभास की तरह
जिन्दा हो हमारे रग–रग में
हवा की तरह मौजूद हो
हमारे हर दुःख–सुख में

तुम यहीं कहीं
बसी हुई हो हमारे दिल में
जैसे मौजूद थे हम कभी
तुम्हारी कोख में। ❑❑❑

यह लालटेन

सभी सोये हुए हैं
केवल जाग रही है
एक छोटी–सी लालटेन
रत्ती भर है प्रकाश जिसका
घर में पड़े अनाज जितना
बचाने के लिए जिसे
पहरा दे रही है यह
रातभर!

❑❑❑

परीक्षाफल

वह बच्चा
पिछड़ा हुआ बच्चा
चील की तरह भागा
अपना परीक्षाफल लेकर
अपनी माँ के पास
एक बार माँ बहुत खुश हुई
उसके अच्छे अंक देखकर
फिर तुरंत उदास
किताबें खरीदकर देने के लिए
पैसे नहीं थे उसके पास।

❑❑❑

ऊँचाई पर

ऊँचाई पर चढ़े लोगों को
दुनिया बहुत छोटी नजर आती है
और नीचेवालों को
ऊपरवाला बहुत दूर।

❑❑❑

उसके पीछे

गाड़ी चमक उठी थी
उसके हाथों की रगड़ से
जिसके पीछे उसे अपना झाँकता हुआ
चेहरा नजर आया
और उसके पीछे
सवार भूख।

❑❑❑

निर्बल

इतने निर्बल नहीं
जो रहते चुप
चुप है जमीन
पाँव से दबी
छुपाये ताकत
ढ़ेर।

❑❑❑

प्रतिबिम्ब

अपनी असंख्य डालियों का बोझ उठाये
चुपचाप खड़ा है यह पेड़
और इसके भीतर
मैं देखता हूँ
एक बोझ ढोने वाली
औरत का प्रतिबिम्ब ।

❑❑❑

बैण्डबाजे वाले

आधी रात में
बैण्डबाजे वाले
लौट रहे हैं
वापस अपने घर
अन्धकार के पुल को
पार करते
जिसके एक छोर पर
खड़ी है उनकी दुखभरी जिन्दगी
और दूसरे छोर पर
सजी–धजी दुनिया!

❑❑❑

तुम्हारी थकान

इधर तुम काम बन्द करते हो
उधर सूरज अपनी रोशनी
चारों तरफ अँधेरा छा जाता है
और तुम्हारी थकान
जलने लगती है
एक मोमबत्ती की तरह।

❑❑❑

फुटबॉल

अचानक गोल
कुछ दर्शक चिल्लाते हैं
बहुत अच्छा हुआ
कुछ चुपचाप हैं
अपने पक्ष को
हारते देख
–गेंद को थोड़ा–सा भी
अवसर नहीं
सोचने का,
वह किसका साथ दे
किसका नहीं!

❑❑❑

पिंजड़ा

सचमुच पिंजड़े के बाहर
कितनी आजाद है दुनिया
और इसके भीतर कितनी तंग
फासला दोनों के बीच है
बस हाथ बढ़ाओ और
छू लेने जितना
फिर भी लग जायेगी
सारी जिन्दगी इस पंछी को
इसे पार करने में भी।

❑❑❑

शंका

कचड़ा उठाने वालों पर
कुत्ते भौंकते हैं
जबकि वे जानते हैं
अब कचड़े में कुछ भी नहीं
जो भी था वे खा चुके
फिर भी शंकित –
शायद कुछ बचा हो।

❑❑❑

लैम्पपोस्ट

यह लैम्पपोस्ट
कितना संतुष्ट
हर रात अपनी सीमा में
प्रकाश बिखेरता
कभी नहीं भूलता अपना दायरा
पाँव फैलाने का।

❑❑❑

दो हिस्से

दो हिस्से हैं
हमारे शरीर के
एक को जागते हुए जीना
दूसरे को सोते हुए।

❑❑❑

छिपकली

दीवारों के सहारे
खूब रेंगना आता है इसे
और चुपके-चुपके
शिकार करना भी,
नन्हें-नन्हें मच्छरों की
एक छोटी-सी जिन्दगी,
जिसे और छोटा कर देती है यह।

❑❑❑

लोहा बन गया हूँ मैं

सरल मार्गों का
अनुसरण कब किया मैंने
खाई-खन्दक से भरी जमीन पर
योद्धा बन कर गुजरा हूँ मैं
धूप में तपकर
अनगिनत रूपों में ढला हूँ मैं
वक्त ने सौंपे जो भी काम
हँसते हुए पूरा किया उन्हें
कभी थका नहीं
पहाड़ों पर चढ़ते हुए
लोहा बन गया हूँ मैं
झेलते-झेलते।

❑❑❑

काम

काम कितने महत्वपूर्ण बन जाते हैं कभी–कभी
उनके सिवा कुछ भी नहीं सूझता उस वक्त
हो जाता है शरीर पसीने से लथ–पथ
और पाँव जकड़ जाते हैं थकान से
मन में बस एक ही बात गूँजती है
कब काम खत्म हो और
लौट जायें अपने घर
लेकिन काम कभी खत्म होते नहीं
सौंप जाते हैं, दूसरे काम
अपनी जगह पर
जाते–जाते भी।

❑❑❑

हर कदम पर

हर कदम पर
बोझ देती है जिन्दगी
इसे उठाये चलो
या रहो खाली हाथ।

❑❑❑

भाग्य रेखा

नीले आकाश के बीच
बादलों ने खींची है
मेरी भाग्य रेखा
बादलों से झाँकते हैं
टिमटिमाते तारे
जिनमें बसी हैं
मेरी शुभ और अशुभ घड़ियाँ
तिनका हूँ अभी मैं
हवा में उड़ता हुआ
धूल हूँ पृथ्वी की
क्या पता कल बन जाऊँ
माथे का तिलक किसी का
फिर भी तो ऐ मिट्टी
तेरी ही अंश हूँ
न जाने कब
पाँव तले रौंद दिया जाऊँ।

❑❑❑

आजकल

रात बढ़ रही है अपने चरम की ओर
और शहर तैयारी कर रहा है सोने की
कुछ दुकानें अभी भी खुली हैं
निर्भीक ग्राहकों को पेय परोसती हुई

चारों तरफ घूम रही हैं गाडियाँ
पुलिस जासूसों की टटोलती हुई अपराधियों को
अचानक एक चीख निकलती है कहीं दूर से
हेडलाइट की रोशनी की तरह
और कत्ल हो जाता है किसी का
सोये लोग जाग उठते हैं आस-पास के
और मचाते हैं शोर कौओं की तरह

उड़ती है यह खबर आकाश में
और छप जाती है इन्तजार करते अखबारों में
सुबह-सुबह पढ़ते हैं लोग जिसे
हाथ की अँगुलियों में थामकर
चाय की गर्म-गर्म प्याली के साथ
जैसे यह कोई अखबार नहीं
ताजे बिस्कुट का एक टुकड़ा हो।

❑❑❑

सेल्समैन

वह कितना प्रभावहीन था
जब आया था मेरे पास

– देखते–देखते
तन गया था उसका पूरा शरीर
एक योद्धा की तरह
उसने रख दी थी नजरें मेरे चेहरे पर
मानो वह मेरा ही मुखौटा हो

–तर्कपूर्ण बातों से
कसता जा रहा था मुझे
एक शिकंजे में
वह वही बोल रहा था
जो मैं सुनना चाहता था
वह वही समझा रहा था
जो मैं समझना चाहता था

हाव–भाव सभी सतर्क थे
तत्पर थे पूरा करने के लिए
जो वह करना चाहता था
दौड़ रहा था आत्मविश्वास
उसके रग–रग में
जितने पैदा कर दिया था

मुझमें ऐसा विश्वास
मानो वह मेरा बहुत
पुराना मित्र हो

उसके कपड़े–जूते चेहरे सब
चमकने लगे थे एक तेज से
जिनके आगे मैं झुकता
चला जा रहा था
जबरदस्ती नहीं खुशी से

अंत में वह हँसा
मानो जीत लिया हो उसने
जो वह जीतना चाहता था

वह एक अच्छा
सेल्समैन था।

❑❑❑

ओ काम करने वाले भाई

ओ सात मंजिला
इमारत में काम करने वाले भाई
जब भी मैं यहाँ से गुजरता हूँ
बहुत अच्छा लगता है मुझे
तुम्हें काम में व्यस्त देखकर
कभी–कभार तुम्हारे पसीने की बूँद
मेरे सिर पर गिर जाती है
और मैं महसूस करता हूँ
यह बहुत भारी है
तुम्हारे कठिन काम की तरह
मुझे बहुत सहानुभूति है तुमसे
कभी नीचे मिलोगे तो
जीभर के बातें करेंगे
वैसे मैं कोई
राजनीति की धूप दिखानेवाला
नेता तो नहीं हूँ
किन्तु तुम्हारे दुखों को
अपने हृदय में
जरूर महसूस कर सकता हूँ।

❑❑❑

मजदूर के घर कबूतर

मेरे दादा मजदूर थे
लेकिन अपनी मर्जी के
वे साइकिल के पीछे
अनाज की बोरी रखकर
मुट्ठी भर-भर पूरे गाँव में बेचते थे
और थोड़े से पैसे लेकर
शाम को घर लौटते थे
और उस वक्त
कबूतर उनका इंतजार करते थे
जो बोरे को झाड़ने के बाद
बचा हुआ अन्न खाकर
पानी पीते
और उड़ जाते थे
लोग कहते थे
यह कैसा प्रेम
मजदूर के घर कबूतर
और मेरी दादी
सबकी नजरें चुराकर
हर सुबह थोड़ा-सा
अनाज बिखेर देती थी
जिसे खाकर वे चुपचाप
छत पर उड़ जाते थे
दादा कभी नहीं समझ पाये

इस राज को
हमेशा की तरह
बोरों को झाड़-झाड़कर
अनाज बाँटते हुए
बहुत खुश होते थे वे।

❑❑❑

बारिश

कल सारी रात बारिश हुई
जैसे बादलों को मिला हो
सब कुछ साफ करने का काम
धूल, गन्दगी सब कुछ बहती रही
गाय-भैंस और पेड़
सब चमकने लगे
चमकने लगे रास्ते और घर
लेकिन नहीं थे जिनके पास घर
उनका क्या हुआ होगा ?

❑❑❑

मजदूर की लड़ाई

अभी सूरज भी नहीं निकला होगा
और तुम जाग जाओगे

तुम्हारे जागते ही
जाग जायेंगे
ये पेड़–पक्षी और
धूलभरे रास्ते

तुम हँसते हुए
काम पर बढ़ोगे
और देखते ही देखते
यह हँसी फैल जायेगी
ईंट–रेत और सीमेंट की बोरियों पर
जिस पर बैठकर
हँस रहा होगा तुम्हारा मालिक

वह थमा देगा तुम्हारे हाथों में
कुदाल, फावड़े और बेलचे
बस शुरू हो जायेगी
तुम्हारी आज की लड़ाई

इस लड़ाई में
खून नहीं पसीना गिरेगा

जिसे सोखती जायेगी धरती
एक रुमाल बनकर बार–बार
जीत होगी दो मुट्ठी चावल

एक थकी हुई शाम
घर लौटने का सुख
और बच्चों की याद

बच्चे कभी नहीं पूछेंगे
तुम कौन सा काम करते हो
वे समझ जायेंगे
तुम्हारी झोली देखकर

हमेशा की तरह
तुम आज भी
हार कर लौटे हो।

❑❑❑

लेकिन कोई घर नहीं

मजदूरों!
तुम्हारे पाँव दिखते हैं
हाथ दिखते हैं
लेकिन तन नहीं

तुम्हारा पसीना दिखता है
काम दिखता है
लेकिन नाम नहीं

तुम्हारा आना दिखता है
जाना दिखता है
लेकिन भूखा रहना नहीं

तुम्हारा हाथ फैलाना दिखता है
सिर झुकाना दिखता है
लेकिन दर्द से कराहना नहीं

तुम्हारे बच्चे दिखते हैं
बीवी दिखती है
लेकिन कोई घर नहीं!

❑❑❑

डर

इन नयी मशीनों को
नहीं चाहिए इतने सारे हाथ
चार अँगुलियाँ ही काफी हैं
आग उगलने के लिए
परेशान हैं लाखों हाथ
आखिर क्या पकड़ेंगे
अब वे कल से ?

❑❑❑

मजबूरी

वह आ तो गया था शहर में
लेकिन पसंद नहीं आई उसे
शहर की तेजी से भागती दुनिया
वह हर दिन सोचता था
इस महीने के आखिर में
लौट जाऊँगा वापस अपने घर
लेकिन उसकी हर चाहत को
रोकता दिखलाई पड़ता था
पुराना लिया हुआ कर्ज
जिसके बीच झाँकता था
गाँव के महाजन का चेहरा
जैसे बढ़ रहा हो उसकी तरफ
फैलाये हुए अपने शक्तिशाली हाथ
ले जाने को उसके सारे पैसे
मनीऑर्डर की शक्ल में
और देखते-देखते बदल जाती थी
उसकी सारी चाहत एक खामोशी में
और बढ़ने लगते थे उसके पाँव
वापस अपने काम पर।

❑❑❑

भाग्य

रोटी सिंकते ही
अपने खुशनुमा चेहरा निकालकर
हँसने लगती है
लेकिन दो पल में ही
निर्मम हाथों से पीटकर
वापस चिपका दी जाती है–
ऐसा ही होती है
दुनिया की हर रोटी के साथ।

❑❑❑

गेहूँ के दाने

ये दाने गेहूँ के
जो अभी बन्द हैं
मेरी मुट्ठी में
थोड़ी-सी चुभन देकर
हो जाते हैं शान्त
अगर जो ये होते
मिट्टी के भीतर
दिखला देते
मुझे ताकत अपनी।

❑❑❑

समानता

सूरज ने सभी को
समान प्रकाश दिया
हवा ने भी एक समान
पोषण किया लोगों का

बीजों ने नहीं देखा कभी
किन हाथों द्वारा लगाये गये थे वे
और हमेशा जमीन पर
उभरकर आये।

❑❑❑

चिट्ठी

रामू की चिट्ठी
कभी नहीं आती
केवल वह मालिक के लिए
चिट्ठियाँ लाता है और ले जाता है,
डाकिया तो उसका
नाम तक नहीं जानता,
फिर भी उसके थैले की तरफ
एक बार झाँकता है
वह जरूर।

❑❑❑

पिता के लिए

पिता के लिए
हम उड़ेंगे एक दिन आकाश में
और माँग लायेंगे
देवताओं से
तुम्हारे लिए ढेर सारी खुशियाँ
रंग-बिरंगे सपने
और हँसता-खेलता स्वास्थ्य तुम्हारा
पिता फिर तुम मुस्कुराना
और तुम्हारी हँसी
बदल जायेगी हमारी हँसी में
जिसके बीच छुप जायेगा
हमारा अन्धकार तुम्हारे प्रकाश में
पिता इस प्रकाश के बीच
हमारे हृदय से झरेंगे
बहुत सारे श्रद्धा के फूल
नये-नये गीत प्रार्थना के
और प्रेम हमारा धूप की तरह
बिखरता जायेगा तुम्हारे चरणों में
तुम इन्हें देखो और कुछ कहो
इससे पहले ही
हम खुशियों के आँसू बनकर
बस जायेंगे तेरी आँखों में
तुम हँसो इससे पहले ही

हम मौजूद होंगे
कहीं–न–कहीं तुम्हारे होठों में
पिता तुम हमसे
कुछ कहो चाहे न कहो
हम मौजूद रहेंगे
हमेशा तुम्हारे साथ
एक साये की तरह।

❑❑❑

पिता के लिए प्रार्थना

मैं प्रतिदिन तेरे द्वार पर आता रहा
और निराश होकर लौटता रहा
इस आशा में कि एक दिन
तू जरूर मेरी तरफ देखेगा
और अपने सर्वव्यापी हाथों से
मेरे आँसू पोंछेगा
विदा करेगा मुझे
अपना दुर्लभ प्रसाद देकर
लेकिन मेरी आशा
रोज मेरे पिता की रुगण शैया
के आस-पास दम तोड़ती रही और
तुम्हारी धरती नाराज होकर रूठी रही
उन्हें पाँवों से खड़े होने का
सहारा तक नहीं मिला
अनगिनत दिन बीत गये
मैं ठीक से समझ भी नहीं पाया
कि तू मेरी परीक्षा ले रहा है या
यह कोई तेरा बहाना है
मुझे अपने पास बुलाने का
अगर तू मेरी प्रार्थना से
थोड़ा-सा भी खुश होता है
तो यह खुशी मेरे पिता के
चेहरे पर बिखेर दे

मेरी आँखें तेरी इस परम अनुकम्पा से
सन्तुष्ट हो जायेंगी।

❑❑❑

बीमार माँ के लिए दर्द

माँ तुम्हारे दाँत नहीं हैं
थोड़ा–सा शर्बत पी लो
मैंने निकाला है इसे
अपने नन्हें हाथों से
देखो इन अँगुलियों में
अभी भी टपक रही हैं
रस की दो–चार बूँदें
यह बूँद नहीं है
प्यार है मेरा माँ

मैं तुम थक गयी हो
पीकर इसे सो जाओ
तुम्हारी नींद से हमें
चैन मिलता है
एक सुकून मिलता है
मिलता है बहुत सारा प्यार
और आते हैं प्यारे–प्यारे सपने।

❑❑❑

एक बात

किसी वृक्ष को क्या परेशानी
उसमें फल आयें चाहे न आयें
या आकर भी झड़ जायें
दिल तो उसका दुखता है
जिसने ये पेड़ लगाये

ऐसा ही होता है
बच्चों के साथ भी
बुढ़ापे में तलाशते हैं
जब हम उनके हाथ
वे एक छड़ी थमाकर
चल देते हैं आगे की तरफ
और हम रोनी सूरत बनाये
जोड़ते रह जाते हैं
अपने पूर्व कर्मों का हिसाब।

❑❑❑

प्रार्थना ही तो है-१

प्रार्थना ही तो है
जो निकलकर आती है
स्वर्ग के किसी द्वार से
और समा जाती है
मेरे निर्मल हृदय में
और फूटती है जहाँ से
कोमल संगीत बनकर मेरे होठों से

–जो होती है
मेरे प्रिय ईश्वर के लिए
जिसे वह सुनता है
मेरे सबसे नजदीक खड़े होकर।

❑❑❑

प्रार्थना ही तो है-२

है ईश्वर–
इस सुबह की प्रार्थना में
छिपा है वह सब
जो चाहता हूँ मैं तुमसे
अपने भविष्य के लिए–

इस शाम की प्रार्थना में
जो मिला है तुमसे
आज दिन भर
उसके लिए आभार।

– मेरी प्रार्थना सुनना प्रभु!

❑❑❑

शिक्षा

शिक्षा कोई प्रकाश नहीं है
अपने आप में
सिर्फ तरीका है
हमें अंधकार से
प्रकाश में ले जाने का।

❑❑❑

विश्वास

मुश्किलों से लड़ने के लिए
कोई अस्त्र नहीं है मेरे पास
अस्त्र के नाम पर
सिर्फ एक विश्वास है
हर लड़ाई में मैं
उसे ही बचाने की कोशिश करता हूँ
क्योंकि यही मुझे बचाये रखता है।

❑❑❑

वे सफेद हाथ

जाता था जब भी मैं
मिट्टी से खेलने
हाथ पकड़कर माँ
ले जाती थी भीतर
हाथों में मिट्टी
चेहरे पर झुँझलाहट
सब कुछ बह जाता
पानी के साथ–साथ
वे सफेद हाथ
कितने गन्दे लगते थे मुझे।

❑❑❑

मुझे थोड़ा सा वक्त दे

मैं अपने छोटे–छोटे कदमों से
कैसे नाप सकूँगा
तेरी इस सर्वोपरि विशालता को ?
मेरी आँखों की रोशनी
दूर–दूर तक भटकती है तेरी खोज में
और हर रात
हारकर वापस लौट आती है।
मेरे कान अभी कच्चे हैं
वे तेरे मीठे स्वर एवं
कोलाहल में विभेद नहीं कर पाते।
मेरा मन अतिशय भौतिकता में
लिप्त होकर कठोर हो गया है,
वह तेरी फूलों जैसी कोमलता को
आलिंगन करने में असमर्थ है।
मुझे थोड़ा–सा वक्त दे
अपने आप को तेरे काबिल बनाने के लिए।

❑❑❑

हर आने वाली मुसीबत

उसकी गतिविधियाँ
असामान्य होती हैं
दूर से पहचानना
बहुत मुश्किल होता है
या तो वह कोई बाढ़ होती है
या तो कोई तूफ़ान
या फिर अचानक आई गन्ध

वह अपने आप
अपना द्वार खोलती है और
बिना इजाजत प्रवेश कर जाती है

फिर भागते रहो
घंटों छुपते रहो इससे
जब तक वह दूर नहीं चली जाती
हमारे मन से

बचा रह जाता है
उसके दुबारा लौट आने का भय।

❑❑❑

शोर

अलग–अलग
होता सबको शोर–
भीड़ का
रोने का
बहते पानी का और
गुस्से का
थक जाता जब
सारा शोर
शांति होती है
सबकी एक जैसी ही।

❑❑❑

मौत का दुःख

मत जाओ उस बूढ़े आदमी के पास
कल ही उसका जवान बेटा मरा है
उसे किसी की सांत्वना की जरूरत नहीं
उसे चाहिए ढेर सारी ताकत
पहाड़ जैसी हिम्मत
दोबारा खड़े होने के लिए

उसके पास ढेर सारे पैसे हैं
ढेर सारी संपत्ति है
बहुत बड़ा व्यवसाय भी है
लेकिन हाथ नहीं हैं उसे सँभालने वाले
वह रह-रहकर हँसता है बेटे की बेवकूफी पर
जो व्यर्थ में आ गया मौत के चंगुल में
वह भी बच सकता था इससे
जैसे उसका पिता बचता रहा आज तक

वह सख्त नाराज है मौत की साजिश से
वह नफरत से झल्ला रहा है
वह आक्रोश से जल रहा है
वह भूल चुका है ईश्वर को
अब वह प्रार्थना नहीं करेगा
न ही दीप जलायेगा

अब वह जियेगा
अपने आत्मविश्वास के सहारे
अकेला सिर्फ अकेला
आज भी और आगे भी।

❑❑❑

स्पर्श

माँ बेटी के बालों में
कंघी करती हुई
एक स्पर्श लौटा रही है
जो मिला था उसे
कभी अपनी माँ से।

❑❑❑

तलाश

ईश्वर ने उसे बच्चा नहीं दिया
बच्चे के लिए झाँकती थी वह
सारी पृथ्वी और आकाश
लेकिन कहीं कोई चीख नहीं
कहीं कोई पुकार नहीं
याद आते थे उसे
पालने में झूलते हुए भगवान
खेतों से लहलहाकर उठते हुए बीज
बादलों से फूटकर बरसता हुआ पानी
सब कुछ जैसे ओस की बूँद की तरह
दो पल ठहरता था
उसकी नजरों के आगे
और अभी आया-अभी आया
कहकर चला जाता था दूर
फिर वह अकेली
रेगिस्तान की रेत की तरह
ढूँढ़ती रह जाती थी पानी
पानी-पानी-पानी
कौन खेल रहा है उससे
कहाँ है वह
किसने छुपा रखा है उसके हिस्से का पानी
और सोचते-सोचते

पसीने की दो–चार बूँदें
वापस लौट आती थीं
उसके माथे पर
जो देखते–देखते
लुढ़क जाती थीं
ढलान पर
मिट्टी की गोद में
जहाँ लाखों गर्मी के कण
टूट पड़ते थे उसे खाने के लिए।

❑❑❑

चिता

सबसे तेज आँच होती है
जलती हुई चिता की
जिससे भय खाकर
बारिश भी दूर चली जाती है
उतनी ही डरावनी होती है
इसकी राख
अचानक मृत्यु की याद
दिला देती है हमें।

❑❑❑

टोपी

तरह-तरह की टोपियाँ
हमारे देश में
सबका एक ही काम
सिर ढकना
-नहीं एक और काम
विभाजित करना
लोगों को
अलग-अलग समुदायों में।

❑❑❑

अचानक

अँधेरे कमरे में
जहाँ कुछ भी नहीं सूझता था
यहाँ से वहाँ तक
जलाया मैंने एक छोटा सा दीपक
देखते ही देखते प्रकाश दौड़ा चारों तरफ
खोलता हुआ सबकी आँखें।

❑❑❑

जलने के बाद

चिता के जलने के बाद
बच गया है–
प्यार
जैसे राख।

❑❑❑

पहले और बाद

शिकार के पहले
वे घोर दुश्मन
–बन्दूक और शेर
बाद में अच्छे दोस्त–
एक साथ
दीवार पर सजे।

❑❑❑

पशु-पक्षी

बहुत सारे पशु–पक्षी
लाये गये हैं
जंगल से पकड़कर
अब आदमी पर
विश्वास करना
उनकी मजबूरी है
और शोर मचाना गुनाह।

❑❑❑

पहली बार

अभी–अभी बड़ा हुआ था
वह हिरण
पहली बार झेला था
एक खूंखार चीते का हमला
किसी तरह बचाये अपने प्राण
बैठा है अब एक कोने में जाकर
हाँफता हुआ
यही सोचता होगा–
जिन्दगी इतनी मुश्किलों से है भरी!

❑❑❑

काँटा

एक बार नहीं अनेक बार
वह घुसा है चोर की तरह
तालाब के शान्त पानी में
और देखते-देखते
चुराकर लाया है एक मछली
बहुत सारी मछलियों के झुण्ड से
फिर भी अनजान रहीं मछलियाँ
चुप रहीं मछलियाँ
थामा उसका हाथ हमेशा
कोई अपना प्रिय समझकर

❑❑❑

रेगिस्तान

मैं बढ़ रहा था
रेगिस्तान के टीलों की तरफ
एक बेहद मुश्किल यात्रा में–

चारों ओर आग ही आग जल रही थी
शायद बहुत भूखी होंगी यहाँ आत्माएँ
वे मेरा मांस–खून सब रेत पर चने की तरह
भूनकर खा जाना चाहती थी
मैं बार–बार अपने शरीर पर पसीना छिड़कता
और किसी तरह से अपना बचाव करता

मैं सूखता जा रहा था कपड़ों की तरह
और दूर–दूर तक पानी नहीं था प्यास बुझाने को
मुझे जोरों की भूख लग रही थी और
वहाँ रोटी नहीं थी न ही इसे पकाने वाले हाथ

उधर सूरज रोटी का रूप धरकर
बादल पानी की तरह
मेरी भूख–प्यास और ज्यादा बढ़ा रहा था

हवाएँ तेज हो गयी थीं
आँधियाँ चल रही थीं और इस आग की राख
उड़–उड़कर चारों तरफ फैल रही थी

जो देखते-देखते ऊँचे-ऊँचे ढेरों
में तब्दील हो गयी।

मैं समझ गया यह एक अशुभ जगह है
थोड़े से स्पर्श से धँसती रेत
आश्रय नहीं दे सकेगी मुझे
यहाँ जीना लगभग असंभव है

मैं वापस नीचे की ओर बढ़ने लगा
अपने छोड़ आये पाँवों के निशान के सहारे
सूरज भी डूबने लगा था पीछे की तरफ
अपने नियमित पथ पर

अचानक मेरी नजर पड़ी
बहुत सारी बबूल की झाडियों पर
जिन्हे मजे से खा रहे थे दो-तीन ऊँट।

❑❑❑

साहस

मालिक की आँखें हो गयी हैं छोटी
देखती हैं वे केवल अपने बच्चों को
बाँटती हैं वे ढेर सारी पटाखे रंग-बिरंगे
होती हैं खुश उन्हें फोड़ते देखकर
पास खड़ा घर का काम करने वाला बच्चा
जो देखता है अपने मालिक को
पिता की नजर से
कर नहीं पाता साहस थोड़ा-सा भी
दो फुलझड़ियाँ तक उनसे माँगने का।

❑❑❑

तैयारी

गेंदे की माला,
सफेद और लाल कमल के फूल
मिट्टी के दीये,
धानखोई और पटाखे
सभी चीजें जमीन पर फैलाये
बैठे हैं छोटे-छोटे दुकानदार
शुरू होती है जहाँ से
दीपावली की तैयारी
हर घर में।

❑❑❑

दीवाली के बाद

कल तारों की तरह दीये भर गए थे
चारों ओर पृथ्वी में
थोड़ा ऊपर से देखो तो
जैसे असंख्य आग के बिन्दु
धधक रहे हर घर की सीमा पर
आज कुछ भी नहीं
जैसे हवा ने बुझा दिया हो
सब कुछ अपने हाथों से
पड़े हैं सूखे दीये चारों तरफ
आकाश पी चुका है जिनका तेल
बत्तियाँ सूख गयी हैं, कोयले–सी
और खाली जेबों में लोगों के
पैसा दिखाई देता नहीं कहीं।

❑❑❑

घास-१

बारिश खींच रही है
इसके पतले-पतले हाथ
सूरज भी उठा रहा है इसे
सहारा दे-देकर ऊपर की ओर
मिट्टी ने भी सौंप दी है इसे
खाने को अपनी पूरी थाल
फिर भी उठा नहीं पाती
यह अपने पाँव
आलस मन से सोयी रहती है
जमीन के आस-पास।

❑❑❑

घास-२

घास जन्म लेती है
मिट्टी से फूटकर
लिये इच्छाएँ
चाँद छूने की
लेकिन समय के साथ
कभी काट दी जाती है
तो कभी कुचल दी जाती है
या फेंक दी जाती है
उखाड़ कर दूर कहीं।

कोई नहीं सोचता
इनके नन्हें से मन का दर्द
न ही कोई झाँकता
इनके चेहरों की तरफ
यहाँ तक कि बड़े पेड़ भी
रहने नहीं देते इन्हें
अपनी छाया के आस-पास

हर बार लोगों के
मुँह से निकल
गुस्से की पीक खाकर
सो जाती है बेचारी

बिना किसी शिकायत के
चुपचाप।

❑❑❑

पतझड़ के बाद

ये सारे पेड़ खड़े हैं
सुखी लकडियों की तरह नंगे
कपड़े जिनके उड़ गये हैं हवा में
अब धरती भेज रही है
फिर से इनके लिए
नये–नये कपड़े
होते हुए जड़ और तने से
वहीं डालियाँ कर रही हैं तैयारी
खुशी से फूटने की
फूलों की बारी है बस इसके बाद।

❑❑❑

पेड़

पत्ते झड़ने से पहले
रंग बदल लेते हैं अपना
एक रूखा पीलापन–सा
झलकता है उनके चेहरे में
फिर खोलकर अपने पाँव
उड़ जाते हैं हवा में
पेड़ वहीं का वहीं रहता है खड़ा
सामर्थ्यवान।

❑❑❑

पक्षियों के लिए

पक्षियों के लिए
जमीन है–
खाने की थाली,

आकाश है–
क्रीड़ा स्थल

और पेड़ हैं–
आरामगाह।

❑❑❑

सड़े हुए फल

इन्हें चिडियाँ भी न खा पायीं
न ही चख पाया
आदमी इसका स्वाद
केवल पड़ा रहा सामने
बेचैनी बनकर।

❑❑❑

तरबूज

जब उसे काटा गया
दो टुकड़े में
होंठ दिखला-दिखलाकर
हँस रहा था वह
फिर उसे काटा गया
अनेक टुकड़ों में
अब वह मुँह फाड़-फाडकर
हँस रहा था
धड़नुमा थाल में!

❑❑❑

इन्तजार

अनगिनत अमरूद लगे हैं
हमारे घरवाले पेड़ पर
वे लटके हुए हैं डालियों पर
हरे तोते की तरह
भीतर से जिनके
एक मीठी–सी गन्ध
लगी है अब मुँह खोलने
शायद दो–तीन दिनों में
पक जायेंगे ये अच्छी तरह से
और बहने लगेगा स्वाद
हमारी जीभों पर
हम बेसब्री से कर रहे हैं
उस दिन का इन्तजार
और आस–पास के पक्षी
उस पर चोंच मारने का।

❑❑❑

फसल

धीरे–धीरे फसल पक रही थी
और झाँकने लगे थे
उसमें से पैसे।

❑❑❑

सपना

हर रोज
एक सपना देखती है नदी
आता है चाँद जिसमें
तारों से भरा परिवार लेकर
रहता है देर तक
नहाता हुआ,
डुबकी लगा–लगाकर
जब तक आदमी के पाँव
जगा नहीं देते उसे।

❑❑❑

पुराने जमाने का व्यंग्य

उन दिनों राजा आते थे गाँव में
होकर सवार अपने रथ पर
जिनके घोड़ों की टाप से
पूरा का पूरा गाँव बजता था
एक ढोलक की तरह
घबराकर निकलते थे लोग घर से
और उठाते थे अपने हाथ
सर्कस के हाथी की तरह
फिर अपने दोनों पाँवों को
मिट्टी में धँसाकर
चिंघाड़ते थे जोरों से
राजा की जय हो
जय हो राजाजी की
मन्त्र की तरह गूँजते थे ये स्वर
कुछ देर हवा में
फिर वापस लुप्त हो जाते थे
कुत्ते जाग जाते थे
इस बाघनुमा हमले से
और साइलेंसर के पाइप की तरह
लगते थे जोरों से भौंकने
वे पीछा करते थे रथ का
गाँव के अन्तिम छोर तक
और राजा घुमाता रह जाता था

अपनी चमकती हुई तलवार चारों ओर हवा में
लेकिन अफसोस इन बहादुरों का
कहीं भी लिखा नहीं गया नाम
इतिहास की किताबों में।

❑❑❑

पत्नी के जन्म दिन पर

कविता न लिख पाया
जो लिखनी थी
आ गया पहले ही
तुम्हारा जन्मदिन
पूछता कहाँ है–
वह तोहफा
शब्दों से भरा
वाक्यों से सजा
थरथरा रहे
जिसे पाने हेतु
मेरे होंठ
रोमांच जाग रहा
कौतूहल की माँद में
माँग भी चमक रही
चेहरा भी हुआ लाल
कहाँ है वह ?
सुनकर तेरी बातें
आँखें मेरी झुक आयीं
कविता लगी
पंख फड़फड़ाने
किन्तु लिखूँ किस भाव से
जब सब कुछ
सौंप दिया है तुम्हें आज। ❑❑❑